IJIRSET
International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 11, Issue 11, November 2022

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.118

9940 572 462
6381 907 438
ijirset@gmail.com
www.ijirset.com

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 11, November 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1111090 |

संचार माध्यम और हिंदी

डॉ. नवल किशोर

सहायक आचार्य-हिंदी, राजकीय महाविद्यालय नोखड़ा (बाड़मेर), राजस्थान, भारत

सार

संचार के माध्यम के रूप में हिन्दी का प्रयोग कोई नयी बात नहीं है, अभिव्यक्ति की क्षमता पाते ही, जन-कथा एवं पुराण कथा के रूप में हिन्दी जनसंचार का माध्यम बन गई थी। भारतीय नेता हिन्दी की शक्ति को समझते हैं, इसलिए उन्होंने जनसंचार के विभिन्न माध्यम, रंगमंच, प्रकाशन, प्रसारण, फिल्में, जनसभा संबोधन सभी में हिन्दी का व्यापक प्रयोग कर विदेशी शासन के विरुध्द सशक्त जन आंदोलन चलाया था।
ज्ञान, अनुभव, संवेदना, विचार, अभिनव परिवर्तनों की साझेदारी ही संचार है। जनसंचार, साधारण जनता के लिए होता है। इससे संदेश तीव्रतम गति से गंतव्य तक पहुंचता है। इसका रूप लिखित या मौखिक हो सकता है। इसके द्वारा जनसामान्य की प्रतिक्रिया का पता चल जाता है एवं इसका प्रभाव बहुत गहरा होता है।
हिन्दी की संप्रेषण क्षमता अतुलनीय है। संप्रेषण हमारे वातावरण के साथ शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्तर पर एक प्रकार की अंत:क्रिया है। मीडिया के रूप में प्रचलन में है। प्रिन्ट मीडिया। दूसरा है-इलेक्ट्रॉनिक मीडिया। आजकल हिन्दी का प्रसार वैश्विक व्यवसायीकरण के कारण निरंतर हर तरफ हो रहा है एवं संख्या बल के आधार पर हिन्दी आर्थिक एवं वाणियिक कार्यों की भाषा बनती जा रही है, विश्व-भाषा बन रही है।
प्रिंट मीडिया में समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं आती हैं। स्वतंत्रता के बाद समाज में राजनैतिक जागृति, सामाजिक, धार्मिक, आपराधिक, आर्थिक गतिविधियों एवं घटनाओं के प्रति जन सामान्य की जिज्ञासा में वृध्दि हो रही है।
भारत में सबसे अधिक 20,589 समाचार पत्र हिन्दी में प्रकाशित होते हैं, जबकि अंग्रेजी में 7596 समाचार पत्र छपते हैं। सन् 2001 में 2057 दैनिक पत्र हिन्दी में निकलते थे।
प्रिंट मीडिया ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को हिन्दी के माध्यम से बहुत गति प्रदान की थी। स्वतंत्रता के बाद हिन्दी को राजभाषा घोषित करने के कारण हिन्दी समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं का निरंतर प्रसार बढ़ता जा रहा है, इनके कई संस्करण छप रहे हैं। पत्रिकाओं ने समाज में साहित्यिक चेतना संप्रेषित की है। अधिकांश समाचार पत्रों में पृथक से साहित्यिक पृष्ठों के प्रकाश द्वारा हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं में श्रेष्ठ रचनाओं का प्रकाश किया जा रहा है। विदेशों में सभी प्रमुख शहरों से हिन्दी पत्रिकाएं निरंतर छपती रहती हैं। नई दिल्ली में अमेरिकन दूतावास द्वारा स्पेन पत्रिका एवं ब्रिटिश समीक्षा हिन्दी में भी छपती है। विदेशों में सैकड़ पत्रिकाएं छप रही हैं।

परिचय

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं इन्टरनेट पर भी हिन्दी का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है। हिन्दी का आजकल प्रयोजनमूलक रूप का निरंतर विकास हो रहा है। 1926 से रेडियो का भारत से प्रसारण शुरु किया गया, यह पहले गैर- सरकारी संस्था के पास था, बाद में 1930 से इसे भारत सरकार ने अपने अधीन कर लिया।
1949 से हिन्दी प्रसार के लिए अहिन्दी भाषा केन्द्राें से हिन्दी प्रशिक्षण के कार्यक्रम शुरु किए गए। अब कई केन्द्रों से हिन्दी के व्यावहारिक प्रयोग का ज्ञान बढ़ाने के लिए हिन्दी के पाठ निरंतर प्रसारित किये जाते हैं। रेडियो नाटक लेखन बीसवीं सदी में एक सशक्त साहित्य विधा के रूप में उभरा है। आकाशवाणी केन्द्रों में निरंतर हिन्दी में वार्ताएं प्रसारित की जाती हैं। कवि सम्मेलनों का भी आयोजन किया जाता है। आकाशवाणी की देश की 95 प्रतिशत जनसंख्या तक पहुंच है। इसके विविध भारती एवं एफएम चैनल, चित्रपट संगीत द्वारा हिन्दी के प्रसार में अपूर्व योगदान कर रहे हैं।
विश्व के कई प्रमुख देशों के आकाशवाणी कंपनियां जैसे बीबीसी लंदन, वायस ऑफ अमेरिका रेडियो सिलोन, जर्मन रेडियो व अन्य केन्द्रों से हिन्दी में समाचार व हिन्दी फिल्मों के गाने वार्ताएं प्रसारित होती रहती हैं, इसलिए कहा जाता है कि हिन्दी का सूर्य कभी नहीं डूबता, यह विश्व भाषा बनकर रहेगी।
हिन्दुस्तान में दूरदर्शन का प्रादुर्भाव 70 के दशक से हुआ। इसे सूचना देने, ज्ञान का प्रसार करने एवं मनोरंजन का साधन मानकर बढ़ावा दिया गया। हिन्दी की साहित्यिक कृतियों में उपन्यास, नाटक, कविता, कहानी, कवि सम्मेलनाें आदि के माध्यम से दूरदर्शन ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। रामायण, महाभारत, कौन बनेगा करोड़पति आदि धारावाहिकों द्वारा हिन्दी घर-घर पहुंच गई है।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 11, November 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1111090 |

अंग्रेजी चैनल धीरे-धीरे विज्ञापन के लिए हिन्दी को अपना रहे हैं। विज्ञान पर आधारित कार्यक्रम, नेशनल योग्राफिक एवं डिस्कवरी भी हिन्दी में प्रसारित की जा रही है। फिल्मों के द्वारा हिन्दी की लोकप्रियता सातवें आसमान पर पहुंची है। जो हिन्दी फिल्मों के विदेशों के राईड्स हिन्दुस्तान के राईड्स से यादा राशि प्राप्त कर रहे हैं। देश कम्प्यूटर एवं इन्टरनेट पर हिन्दी के ब्लाग बनाये जा रहे हैं, और इनकी संख्या तेजी से बढ़ रही है।इस तरह, हिन्दी जनचेतना को स्वर देने में सर्वाधिक समर्थ होकर धीरे-धीरे विश्व में अपना सम्मानजनक स्थान बनाने की ओर अग्रसर हो रही है।[1]

अनुवाद एक ऐसी प्रक्रिया है जो दो भाषाओं, दो संस्कृतियों के बीच सेतु का काम करती है। अनुवाद की प्रक्रिया से हम सब गुजरते हैं, शायद जिस का हमें कभी आभास नहीं होता। अनुवादक के लिए द्विभाषा का ज्ञान होना आवश्यक है। हम अंग्रेजी लिखते हुए अक्सर अपनी मातृभाषा हिन्दी में सोचते हैं, और फिर अंग्रेजी में उसका अनुवाद करते हैं। वह बच्चे जिनकी मातृभाषा अंग्रेजी नही है उन्हें अंग्रेजी सिखाने के लिए अंग्रेजी-हिन्दी अनुवाद की प्रविधि अपनाई जाती है। यद्यपि अंग्रेजी-हिन्दी भाषाओं की वाक्य संरचना में पर्याप्त अंतर है, और दो भाषाओं की संरचना जानने के लिए यह प्रविधि उत्तम है, क्योंकि इससे दो भाषाओं की संरचनात्मक समानताओं और असमानताओं का ज्ञान हो जाता है, और यह पता चल जाता है कि वाक्य के किस शब्द का क्या अर्थ है। 'साधन रूप में अनुवाद का प्रयोग भाषा शिक्षण की एक विधि के रूप में किया जाता है। जबकि साध्य रूप में अनुवाद व्यापार के अनेक क्षेत्रों में अपनाया जा रहा है। यहां अनुवाद पाठ की अपेक्षा भाषा के आयाम पर होता है। इस रूप में अनुवाद राष्ट्रीय विकास में सहायक होता है। यहां अनुवाद के माध्यम से विकासशील भाषा में आवश्यक और महत्वपूर्ण साहित्य का प्रवेश होता है।' (पृ. 44) जिस परम्परागत अनुवाद का प्रयोग तुलानात्मक अध्ययन/अध्यापन के लिए किया जाता था आज उसका स्वरूप बदल चुका है। जैसे-जैसे भाषा ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में प्रवेश करती है वैसे अनुवाद का स्वरूप भी बदलता जाता है। अब अनुवाद केवल साहित्य अनुवाद तक ही सीमित नही रह गया, बल्कि तकनीक, विधि, प्रशासनिक और जनसंचार क्षेत्रों ने अनुवाद का दायरा बढ़ाया है। अनुवाद प्रत्येक व्यवसाय की जरूरत बन चुका है। आज अनुवाद अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान की शाखा के रूप में न केवल सिद्धंातिक सीमाओं पर दृष्टिपात करता है बल्कि व्यावहारिक स्तर पर भी अनुवाद की बहुमुखी, बहुप्रकृति से हमारा साक्षात्कार करवाता है। आज भाषा विज्ञान की कई शाखाओं जैसे व्यतिरेकी-विश्लेषण, समाज-भाषा विज्ञान, प्रतीक-सिद्धांत और शैली-विज्ञान ने अनुवाद प्रक्रिया को सैद्धंातिक और व्यावहारिक दृष्टि से व्यापक बनाया है। अनुवाद अध्ययन का अनुप्रयुक्त पक्ष समाज- भाषा विज्ञान, शैली-विज्ञान और अर्थ-विज्ञान से जुड़ता जा रहा है। अनुवाद में व्यापकता, भाषा प्रकार्यो को महत्व मिलने के कारण आई है, क्योंकि आज भाषा के व्यवहारगत प्रकार्यो को अधिक महत्व दिया जा रहा है। अधिकांश क्षेत्र व्यावसायिक हो चुके हैं, और अनुवाद कार्य उन व्यवसायों को विकसित करने का माध्यम बन चुका है।

विचार-विमर्श

यह सत्य है कि अनुवाद का व्यवसाय साहित्यिक अनुवाद से प्रारंभ हुआ। यह प्रक्रिया अमेरिका, यूरोप में बहुत तेजी से विकसित हुई, इन देशों का साहित्य जब मूल रूप में लाखों लोगों तक पहुँचता है, तो उसका अन्य भाषाओं में तुंरत अनुवाद कर उसकी मार्किटिंग की जाती है। भारत में भी अंग्रेजी का लोकप्रिय साहित्य हिन्दी भाषा में अनुदित हो कर फैलने लगा है। तस्लीमा नसरीन, विक्रम सेठ, खुशवंत सिंह, शोभा अरुंघती रॉय, चेतन भक्त और अन्य लोकप्रिय लेखकों की अंग्रेजी कृतियां, हिन्दी में अनुदित हो कर प्रकशित हुई है, और इन्होंने अच्छा व्यवसाय किया है। बड़े प्रकाशक अनेक कृतियों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद करवा कर जहां इन्हें विभिन्न वर्ग के पाठकों तक पहुँचा रहे है, वहां वह अपने व्यवसाय को भी बढ़ा रहे हैं। पत्र-पत्रिकाओं के बहुभाषी संस्करण निकाले जाते हैं। इन्डिया टुडे, ब्लिट्ज, रीडर्स डाइजेस्ट मूल रूप से अंग्रेजी में छपते हैं परंतु अब इन्हें हिन्दी में भी छापा जाने लगा है। हिन्दी और अंग्रेजी के समाचार पत्र एक साथ बड़े-बड़े शहरों से निकल रहे हैं। बड़े समाचार पत्रों की अधिकांश सामग्री अंग्रेजी में उपलब्ध होती है। जिसका तुरंत हिन्दी में अनुवाद कर छापा जाता है। शेयर बाजार की खबरें, नए उत्पादों की जानकारी, और व्यवसाय जगत की हलचलों से संबंधित पाठ सामग्री पहले अंग्रेजी में तैयार की जाती है, फिर उसका भारतीय भाषाओं में अनुवाद कर उपभोक्ता समुदाय तक पहुँचाया जाता है। अनुवाद के माध्यम से जन जागरण का काम किया जा रहा है। समाज-कल्याण, और जन-कल्याण की योजनाएं जन-जन तक पहुँच रही है। विश्वभर में सामाजिक-सांस्कृतिक साहित्यिक दृष्टिकोण, राजनीतिक उथलपुथल प्रतिक्षण हम तक अनुवाद के माध्यम से ही पहुँच रहे हैं।[2]

जार्ज स्टीनर अनुवाद के महत्व को स्वीकार करते हुए कहते हैं कि अनुवाद के कारण ही हम मानव की उस आधारभूत सार्वभौमिक, वंशजीय, ऐतिहासिक तथा सामाजिक एकता को अनुभव करते है जो भाषाओं के बाह्य भेद के बावजूद मानवीय भाषा के प्रत्येक मुहावरे की तह में निहित है। अनुवाद कर्म का आशय है कि दो भाषाओं की बाह्य अंतरों की तह में प्रवेश कर मानवीय अस्तित्व के समान तत्त्वो को प्रकाश में लाए। (पृ. 448) भाषा विकास में अनुवाद की अहम भूमिका रही है। जब किसी भाषा को ऐसे व्यवहार क्षेत्रों में प्रयुक्त होने का अवसर मिलता है, जिसमें पहले उसका प्रयोग नही होता था, तब उसे विषय-वस्तु और

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 11, November 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1111090 |

अभिव्यक्ति पद्धति दोनो दृष्टियो से विकसित करने की आवश्यकता होती है। फलस्वरूप विषय वस्तु की परिधि के विस्तार के साथ भाषा में अभिव्यक्ति कोश का क्षेत्र भी विस्तृत होता है। अनेक नए शब्द गढ़े जाते हैं, नए सह-प्रयोग विकसित होने लगते हैं। संकर शब्दावली प्रयोग में आने लगती है और भाषा का एक नवीन रूप विकसित होने लगता है। आधुनिक मीडिया और प्रशासनिक हिन्दी इसके अच्छे उदाहरण कहे जा सकते हैं। जनसंचार माध्यमों में अनुवादक ऐसी भाषा का प्रयोग करता है, जो स्पष्ट, सरल, स्वाभाविक और जनमानस के नजदीक हो और उसे प्रभावित कर सके। इस दिशा में न्यूमार्क के सिद्धांत की चर्चा करनी अपेक्षित होगी। उन्होंने अनुवाद प्रणाली के दो पक्ष निर्धारित किए: अर्थ-केन्द्रित अनुवाद प्रणाली और सम्प्रेषण-केंन्द्रित अनुवाद प्रणाली। संप्रेषण-केंद्रित अनुवाद प्रणाली ही जनसंचार माध्यमों के लिए उपयुक्त है। क्योंकि अनुवादक मूलपाठ में सुधार ला सकता है, अभिव्यक्ति को अधिक आकर्षक बना सकता है। वाक्य विन्यास की जटिलता, दुर्बोधता आदि का परिहार कर सकता है। भाषा प्रयोग की असमान्यताओं का उपचार कर सहज भाषा के संदेश की पुनरावृत्ति कर सकता है। इसलिए वाक्य प्रधान लेखन के लिए संप्रेषण केंन्द्रित अनुवाद उपयुक्त होता है। परंतु दर्शन, धर्म, राजनीति आदि के लिए अर्थ केन्द्रित अनुवाद प्रणाली उपयुक्त रहती है। जिसमें भाषा उतनी ही महत्वपूर्ण होती है, जितना कथ्य। जनसंचार की भाषा में सुबोधता, लचीलापन होता है जो विषय क्षेत्र को विशिष्टता प्रदान करता है। जनसंचार माध्यमों द्वारा सूचनाएं प्रत्येक वर्ग के लोगों तक पहुँचती है। सूचना संप्रेषण पाठको/दर्शकों की बौद्धिक क्षमता के अनुकूल हो, इसलिए जनसंचार भाषा को सरल और सर्वग्राहृय बनाया जाता है। अनुवाद के द्वारा जहां भाषा में सर्वधन होता है, वही ज्ञान का प्रसार और संस्कृति का संवहन भी होता है।

भाषा का सीधा संबंध मानव मन, मानव जीवन और समाज से होता है। भाषा का संबंध यदि एक ओर मन की आंतरिक स्थिति से है तो दूसरी और समाज की संचार व्यवस्था से भी है। परिणाम स्वरूप अनुवाद सामाजिक संप्रेषण और प्रयोक्ता सापेक्ष बनता जा रहा है। जैसे जैसे समाज का व्यापक वर्ग अनुदित पाठ का जाने अनजाने उपभोक्ता बनता है, वैसे वैसे अनुवाद की मंतव्य केंद्रित दृष्टि अभिव्यक्ति की सटीकता, प्रभावशीलता और लक्ष्य भाषा की सृजनात्मक शक्ति पर केंद्रित होने लगती है। इस प्रकार समाज और भाषा, ज्ञान के एक विशेष क्षेत्र का प्रतिपादन करते हैं। समाचार पत्र, रेडियो और टेलीविजन यह तीनो जनसंचार माध्यम अनुवाद की अनिवार्यता से जुड़े हुए है। समाचार पत्रों में विज्ञापन, अर्थव्यवस्था, संपादकीय, फिल्म समीक्षा, खेल कूद सभी विषयों की अपनी भाषा है। इन में तकनीकी शब्दों का प्रयोग विषय विशेष के अनुसार होता है। समाचार पत्रों में अनुवादक की भाषा क्षमता की अहम भूमिका रहती है। विशिष्ट संदर्भ अनुसार शब्द चयन करना, और जटिल वाक्य संरचना से बचना अनुवादक का गुण माना जाता है। समाचार पत्र, पत्रिकाएं लिखित भाषा, ही नही बल्कि (फोटो, चित्र के माध्यम) उच्चरित भाषा के तत्वों को साथ लेकर चलते है। साक्षात्कार, विज्ञापन, समाचारों मे जो बोलचाल का प्रवाह नजर आता है वह उच्चरित भाषा को लिखित भाषा में समाहित करने से आता है निस्संदेह टेलीविजन और रेडियो की उच्चरित अभिव्यक्ति का आधार लिखित भाषा ही होती है। क्योकि लिखित सामग्री को ही मौखिक रूप में प्रस्तुत किया जाता है। रेडियो और टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले विज्ञापन भी मौखिक भाषा की प्रवृत्तियों को ध्यान में रखकर बनाए जाते हैं। उन में अंग संचालन और शारीरिक प्रतिक्रिया भी भाषा के अनुरूप होती है। संचार माध्यमों में इस बात पर ध्यान दिया जाता है कि संप्रेषण अधिक से अधिक हो, और वह कैसे संभव हो सकता है! अनुवाद एक ऐसा माध्यम है जिसकी वजह से संदेश सभी वर्ग के लोगों तक पहुँचाया जा सकता है। इसी लिए रेडियो, टेलीविजन, समाचार पत्र, पैंफलेट, विज्ञापन, हैंडबिल, होर्डिंग इन सभी जनसंचार माध्यमों में अनुवाद लोकप्रिय है। रेडियो में आवाज के इस्तेमाल द्वारा उच्चरित भाषा को लय, ताल, अनुतान द्वारा गुणात्मक बनाना पड़ता है। परंतु समाचार पत्र में समाचार कैसे लिखा जाए इस बात को महत्व दिया जाता है।[3]

रेडियो में हिन्दी में प्रस्तुत किए जाने वाले समाचारों को अंग्रेजी में भी पढ़ा जाता है। टेलीविजन में लिखित और मौखिक भाषा को दृश्यों से जोड़ा जाता है। यदि किसी मंत्री ने हिन्दी भाषा में भाषण दिया है, या हिन्दी भाषा में साक्षात्कार दिया है तो अंग्रेजी समाचारों में उच्चरित अंशो को भाषण के साथ अंग्रेजी में अनुदित कर सक्रीन पर दिखाया जाता है। जनसंचार माध्यमों में पाठ की संप्रेषणीयता, स्वीकार्यता और विषयनुकूलता महत्वपूर्ण मुद्दे हैं। टी.वी., रेडियो, समाचार पत्रों में अनुवाद पाठकों/दर्शकों को ध्यान में रखकर किया जाता है। इसलिए ऐसी शैली का प्रयोग किया जाता है। जो बोधगम्य हो और सर्वमान्य हो।

परिणाम

समाचार पत्रों में प्रयुक्त होने वाली भाषा में समय के अनुसार काफी परिवर्तन आया है। सूचना और प्रौद्योगिकी के कारण शब्द कोश में तो वृद्धि हुई ही है, इससे संबधित शब्दों का प्रयोग भी समाचार पत्रों में आम होने लगा है। जैसे:

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 11, November 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1111090 |

मूलपाठ– The basic rate of mobile to mobile call has been increased.

अनूदित पाठ- मोबाइल से मोबाइल पर की जाने वाली कॉल का बेसिक रेट बढ़ा दिया गया है।

मूलपाठ– Reliance hiked pre-paid call rates by 33%

अनूदित पाठ– रिलांयस ने 33 प्रतिशत मंहगी की प्रीपेड कॉल दरें।

समाचार पत्रों में सूचना प्रौद्योगिकी से संबधित शब्दावली जैसे: लैपटॉप, मोबाइल, फोटोशॉप, आई डी मेल, फैक्स, इंटरनेट, अपलोडिंग, प्रीपेड कॉल, पोस्ट कॉल, आनलाईन ट्रॉजेक्शन, ई-मेल, वेबसाइट, का प्रयोग बिना किसी अनुवाद के किया जाता है। वैसे भी समाचार पत्रों में हिंग्लिश भाषा के प्रयोग की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। जैसे:

मूलपाठ: Pending cases will be disposed off very soon

अनूदित पाठ: पेंडिंग केसो को जल्द लगेंगे पंख।

अनुवाद सिद्धांत के अनुसार कोई भी लक्ष्यपाठ, मूलपाठ के समतुलय नही हो सकता। अनुवादक को अनुवाद करते हुए कई बार कुछ छोडऩा और कुछ जोडऩा पड़ता है, परंतु लेखक के संदेश व मंतव्य को बनाए रखना पड़ता है। कई बार विभिन्न विकल्पों में से सटीक विकल्प ढूंढऩा पड़ता है सामाजिक, सांस्कृतिक भोगौलिक संदर्भों के अनुसार शब्दों का चयन करना पड़ता है और उनकी व्याख्या करनी पड़ती है। समाचार पत्रों में शब्दों व वाक्यों को सधारणतया क्रम में प्रस्तुत किया जाता है। जैसे:

मूलापाठ– CBI questions former Railway Minister Pawan Bansal in railway bribery scam.

अनुवाद– रेल घूस कांड में सी.बी.आई. ने पूर्व रेलमंत्री पवन कुमार बंसल से की पूछताछ।

मूलापाठ– After probing various objects of bribery scam in the railways, the CBI is all set to question former Railway Minister Pawan Kumar Bansal this week. The questioning of Bansal will revolve around his role in the appointment of suspended Railway Board Member (Staff) Mahesh Kumar involving his nephew Vijay Singla who was allegedly caught accepting a bribe of Rs. 90 Lak, Official Sources said.[4]

अनूदित पाठ– रेलवे में घूसकांड के विभिन्न पक्षों की छानबीन करने के बाद सी.बी.आई. भूतपूर्व रेलवे मंत्री से इस हफ्ते पूछताछ करेगी। बंसल से पूछताछ में रेलवे बोर्ड के मेम्बर महेश कुमार की नियुक्ति में उनकी भूमिका से संबंधित प्रश्न पूछे जा सकते हैं जिसमें उनके भतीजे को 90 लाख रुपयों की घूस लेते पकड़ा गया था, दफ्तरी सूत्रों ने बताया।

उक्त अनूदित पाठ में 'घूस' की जगह अन्य शब्द 'रिश्वत' का प्रयोग भी किया जा सकता था।

मूलापाठ– Ashwani returns to practice, argues before SC bench.

अनूदित पाठ– अश्वनी प्रैक्टिस में लौटे, सुप्रीम कोर्ट बैंच के सामने दिया तर्क।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 11, November 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1111090 |

टी.वी. और अनुवाद:

टेलीविजन में दो तरह के अनुवाद महत्वपूर्ण है: ध्वन्यांतरण और उपशीर्षक लेखन। टेलीविजन, समाचार शीर्षकों के लिखित और उच्चरित दोनों रूप प्रस्तुत करता है। डी.डी. न्यूज चैनल पर अंग्रेजी और हिन्दी दोनों भाषाओं में शीर्षकों के स्करॉल चलते रहते हैं। समाचारों को भी हिंदी और अंग्रेजी में लगातार प्रस्तुत किया जाता है। अंग्रेजी-हिन्दी खबरों में साउंड बाइट को अनुवाद कर स्क्रीन पर फ्लेश किया जाता है। दूरदर्शन समाचारों में उच्चरित संप्रेषणीयता और दृश्य दोनों पर ध्यान दिया जाता है। किसी विदेशी नेता का भाषण अगर उसकी अपनी भाषा में है तो उसे ध्वन्यांतरण द्वारा अंग्रेजी में प्रस्तुत किया जाता है। जो बात शब्दों में कही जाती है उसे तथ्यात्मक बनाने के लिए दृश्या का सहारा लिया जाता है। छोटे व सरल वाक्यों का प्रयोग किया जाता है ताकि भाषा सहज, स्वाभाविक, स्पष्ट और बोधगम्य हो। जैसे:

मूलापाठ – Delhi University (DU) admission open today.

अनूदित पाठ – (क) दिल्ली यूनिवर्सिटी में आज से दाखिले शुरू।
(ख) डी.यू. में शुरू हो गई दाखिले की दौड़।

मूलापाठ – World Environment Day is being observed today.

अनूदित पाठ – (क) विश्व पर्यावरण दिवस आज।
(ख) आज विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जा रहा है।

मूलापाठ – India beat England by 7 wickets

अनूदित पाठ – भारत ने इंग्लैंड को सात विकटों से हराया[5]

मूलापाठ – Gold import duty hiked

अनूदित पाठ – सोने पर आयात शुल्क बढ़ा

खेलकूद के समाचारों की अपनी शब्दावली है और अधिकतम शब्दों का हिंदी में भी अंग्रेजी के अनुरूप ही प्रयोग होता है; जैसे: टूर्नामेंट, वल्र्डकप चैम्पियन, सेमी-फाइनल मैच, रन, फाइनल, वनडे, चैम्पियन ट्राफी, प्रीमियर लीग, स्पॉट-फिक्ंिसग, कैम्प, क्वाटर फाइनल, टीम।

इन शब्दों का अनुवाद नही किया जाता, हिन्दी में भी इन शब्दों को अंग्रेजी की तरह इस्तेमाल कर लिया जाता है।

व्यवसाय के रूप में अनुवाद को कई गतिविधियों ने बढ़ावा दिया है। व्यापार जगत में राष्ट्र-कम्पनियों के आने से प्रतिस्पर्धा बढ़ी है। और विपणन की रणनीति में भी परिवर्तन आया है। विभिन्न वस्तुओं के विपणन के लिए प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में ढेरों विज्ञापन दिए जाते है, ताकि विभिन्न उत्पादों के बारे में उपभोक्ताओं को जानकारी प्राप्त हो सके। विज्ञापन की भाषा, विज्ञापित वस्तु के अनुसार अपने को ढालती है। विज्ञापनों में हिन्दी-अंग्रेजी कोड मिश्रण का प्रयोग किया जाता है ताकि अधिक से अधिक लोगों पर इसका प्रभाव पड़े। टेलीविजन के विज्ञापन में उत्पाद के सुंदर चित्रों को गीत, संगीत, लय, ताल में बांध कर प्रस्तुत किया जाता है। और जो लम्बे समय तक दर्शकों/श्रोताओं के दिल और दिमाग पर छाये रहता है। जैसे-

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 11, November 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1111090 |

(क) मैंगो फ्रूटी, फ्रेश और जूसी
दिमाग रहे कूल, गर्मी जाओ भूल

(ख) Clear for real
अब हुआ न सचमुच साफ

Your Natural Choice
आपकी स्वाभाविक पसंद

Trust (Godrej)
भरोसा पूरा भरोसा

Add good taste give good health
बढिय़ा स्वाद बढिय़ा स्वास्थ्य

एक ही विज्ञापन में अंग्रेजी और हिंदी दोनों का अनुवाद एक साथ मिलता है, ताकि विज्ञापन अधिक से अधिक प्रभावी हो सके। [6] विज्ञापन अनुवादक का यह दायित्व होता है कि वह जोडऩे और छोडऩे के चक्कर में मूल रूप के संदेश से दूर न हटे। मूल संदेश, व लक्ष्यार्थ को ध्यान में रखकर अनुवाद किया जाना चाहिए। निम्नलिखित विज्ञापन में अभिधात्मक और लक्ष्यार्थ संदेश इस प्रकार है:

- You just cant beat bajaj
- आज बजाज को परास्त नहीं कर सकते।

जबकि लक्ष्यार्थ संदेश यह है: 'हर दौड़ में बेजोड़ बजाज'

संकेतों के प्रतिस्थापन से विज्ञापन का अनुवाद नहीं किया जा सकता। इसे भाव के धरातल पर सबसे पहले अनुभूत करना होगा फिर लक्ष्य भाषा में उसका लक्ष्यार्थ संप्रेषित करना होगा।

टेलीविजन पर प्रसारित हिंदी विज्ञापन अब यह भी सिद्ध कर रहे हैं कि अंग्रेजी में प्रसारित विज्ञापन उन वस्तुओं के होते हैं जिनकी खपत अमीर वर्ग के लोगों में होती है।

विज्ञापन की भाषा एक अलग प्रयोग के परिदृश्य की मांग करती है। इसमें चयनित भाषा का लोचदार प्रयोग मिलता है।

विज्ञापनों में भाव अनुवाद और अनुसृजन के महत्व को नही भुलाया जा सकता, जैसे:

- bank you can bank upon

आपके भरोसे का बैंक

- Double action Nikhar ro

दोहरा निखार रोज

- Chick hair is thick hair

चिक है यानि थिक है[7]

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 11, November 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1111090 |

विज्ञापन में अंग्रेजी- हिन्दी कोड मिश्रण की तरह ही लिप्यांतरण का प्रयोग भी अधिक होने लगा है। हिन्दी शब्दों को रोमन लिपि में लिखने की प्रवृति उपभोक्ताओं का ध्यान आकर्षित करने के लिए प्रयोग में लाई जाती है। जैसे:

जैसे:

- Simphni
- bharat ko rakkhe kool
- Dil mange mor
- Toofani thanda
- Sab chale befikar

निष्कर्ष

हिंदी भाषा के शैलीगत भेदों को विज्ञापन सटीक प्रयोगो में बांध कर रखते हैं। विज्ञापनों का अनुवाद शन्दिक नहीं बल्कि अनुसृजनातमक होता है। कभी-कभी अनुवाद मूल से भी अधिक सर्जनात्मक, काव्यात्मक और सुंदर होता है, अनूदित विज्ञापन को रोचक, प्रभावात्मक बनाता है।

संक्षेप में जब एक भाषा की रचनाएं अनूदित रूप में लक्ष्य भाषा के संसार में प्रवेश करती है, तो उस के साथ नई अवधारणाए, नयी भंगिमाएं और मौलिक प्रयोग की पूरी दुनिया स्त्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में आ जाती है। दो भाषाओं के अपने सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश होते है जो एक समान नहए होते। भाषा की विशिष्टाता के ध्यान में रखकर अनुवाद किया जाना चाहिए, अन्यथा स्त्रोत और लक्ष्य भाषा की संप्रेषणीयता और बोधगम्यता पर बुरा प्रभाव पड़ेगा।

जनसंचार माध्यमों की भाषा साहित्य की भाषा से बिल्कुल भिन्न होती है, बिल्कुल सरल, स्पष्ट और विषय के अनुकूल होती है। इसलिए अनुवादक को जनसंचार माध्यमों को ध्यान में रखकर अनुवाद करना चाहिए ताकि लाखों लोगों तक संदेश सही अर्थो में पहुँच सके।[8]

संदर्भ

1) विजय कुलश्रेष्ठ व राम प्रकाश कुलश्रेष्ठ, 2005, प्रयोजन मूलक हिन्दी, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, पृ. 44, पृ. 448
2) कृष्ण कुमार गोस्वामी, 2005 भाषा के विविध रूप और अनुवाद, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
3) कृष्ण कुमार गोस्वामी 2007, आधुनिक हिन्दी: विविध आयाम; आलेख प्रकाशन।
4) कृष्ण कुमार गोस्वामी, 2008 अनुवाद विज्ञान की भूमिका, राजकमल प्रकाशन।
5) कैलाशचन्द्र भाटिया, 1985 अनुवाद कला: सिद्धांत और प्रयोग: दिल्ली: तक्षशिला।
6) सूरजभान सिंह, 2003, अंग्रेजी-हिन्दी अनुवाद व्याकरण; नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।
7) विजय राघव रेड्डी, 1986 व्यतिरेकी भाषा विज्ञान; आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।
8) दलीप कुमार, 2011 अनुवाद की व्यापक संकल्पना, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 8.118

doi crossref

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर
NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details